IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)
बिहार शोध समागम
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 2, April-june, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
https://doi.org/10.5281/zenodo.20523157
ISSN : 3048-6971

"बावन बूटी हस्तशिल्प में मास्टर महिला बीवर की न्यूनतम सहभागिता पर आधारित एक समन्वित दृष्टिकोण"

शान्ति कुमारी
शोधछात्रा, इतिहास विभाग,एम. एम. एच. कॉलेज, गाजियाबाद
प्रो. ईशा शर्मा
शोध निर्देशिका,इतिहास विभाग, एम. एम.एच.कॉलेज, गाजियाबाद
संबद्ध चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उत्तर प्रदेश)

शोध सारांश

भारत की सबसे प्राचीन अर्थव्यवस्था का स्वरुप व आधार हस्तकरघा है जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को संबल प्रदान करती है। समाज के संतुलन को बनाए रखते हुए महिला एवं पुरुष को बिना भेदभाव के रोजगार प्रदान कर आजीविका का मजबूत साधन उपलब्ध कराती है. भारत के हस्तकरघा क्षेत्र में महिलाओं का योगदान अधिक है, यहां तक की बिहार में भी महिलाओं की संख्या अधिक है किंतु नालंदा जिला के हस्तकला बावन बूटी में महिलाओं की संख्या अत्यंत ही कम है महिला मास्टर बीबर की संख्या ना के बराबर है जो एक गंभीर तथ्य को इंगित करता है। मेरा यह शोध कार्य नालंदा जिला के बावन बूटी हस्तकला में वर्तमान स्थित, महिलाओं की संख्या कम होने का प्रमुख कारण और समाधान पर आधारित है।

बीज शब्द - हस्तकरघा,ग्रामीण अर्थव्यवस्था, रोजगार,महिला योगदान,बुनकर, बावन बूटी,आजीविका का साधन।

भारत की हस्तशिल्प कला हमेशा से महिलाओं के द्वारा प्रेषित रही है चाहे प्राचीन भारत के कलाओं को देखा जाए या उसे आधुनिक अथवा वर्तमान में देखा जाए लगभग सभी कलाओं में महिलाओं का योगदान अधिक देखा गया है। सिंधु घाटी सभ्यता एक मातृसत्तात्मक व्यवस्था के रूप में संचालित की जाती थी। महिलाएं मिट्टी के बर्तन,खिलौने, मनके आदि उत्पाद अपने हाथों से बनाकर बाजार एवं हाट में बेचा करती थी। व्यापारी कला के सौंदर्य को एक स्थान से दूसरे स्थान तक व्यापार के माध्यम से हस्तकला का प्रसार करते थे। इसी तरह मौर्य काल में भी हस्तशिल्प को विशेष संरक्षण प्राप्त हुआ। पत्थरों पर नक्काशी, मूर्तियां बनाना, बुनाई करना, मृण्मूर्ति बनाना इत्यादि जैसे कार्य किए जाते थे। गुप्त काल में भी उपरोक्त कार्य किए जाते थे। इसी क्रम में पूर्व मध्यकाल, सल्तनत काल, मुगलों के समय में भी हस्तशिल्प द्वारा विभिन्न उत्पाद बनाए गए। राजकीय संरक्षण के साथ-साथ लोगों के द्वारा अपनी जरूरत और स्थानीय आवश्यकता के अनुसार विविध उत्पाद जैसे कपड़ों पर बुनाई,खिलौने बनाना, बर्तन पर चित्र उकेरना, नक्काशी करना, घरेलू सजावट के लिए सौंदर्य उत्पाद बनाना, कढ़ाई इत्यादि जैसे कार्य बहुसंख्यक के रूप से महिलाओं द्वारा किया जाता रहा है । हस्तशिल्प उत्पादों को बनाने में महिलाओं का अधिक योगदान के पीछे विशिष्ट कारण यह रहा कि अधिकांश पुरुष बाहर के कार्य करते थे और महिलाएं घर पर कार्य करती थी और यही परंपरा प्राचीन भारतीय समाज में प्रचलित थी जो अनवरत मध्यकाल एवं आधुनिक काल में भी देखा गया। महिलाओं में वस्तुओं को सौंदर्य बनाने की कला रुचि प्रकृति प्रदत्त प्रदान की गई है जो आज के किसी भी कला में महिलाओं की अधिक सहभागिता को प्रदर्शित करती है।

ब्रिटिश काल में भारतीय हस्तशिल्प में महिलाओं का योगदान अत्यंत ही महत्वपूर्ण था। वह पारंपरिक उत्पाद जैसे कढ़ाई, बुनाई, मिट्टी के बर्तन तथा अन्य सजावटी वस्तुओं को बनाने में संलग्न थी। अंग्रेजी राज्य की नीतियां शोषणकारी

एवं हानिप्रद थी,किंतु इन सभी के बावजूद भी महिलाएं बुनकरी के कार्यों में सहयोग करती थी परिवार को आर्थिक रूप से संबल प्रदान करती थी ।

इस काल की नीति ने हस्तशिल्प को तोड़कर रख दिया कृषि का वाणिज्यकरण,अत्यधिक कर की वसूली, मनमाना

कार्य, न्यूनतम मजदूरी, अधिकतम कार्य जैसी परिस्थितियों ने ग्रामीण तथा शहरी हस्तशिल्प को ध्वस्त कर दिया। भारत अपने सूती कपड़ों के साथ-साथ उसपर बुनाई कला के लिए विश्वविख्यात था। इसी तरह बावनबूटी कला जो ब्रिटिश नीतियों का शिकार होने के कारण आज वह काल के गर्त में समाई हुई है। महिलाओं के द्वारा हस्तशिल्प का प्रचलन छोटे स्तर पर हमेशा से किया जा रहा है इसका प्रमाण वर्तमान के कला रूप की प्रगति में देखा जा सकता है। महिलाओं ने हस्तशिल्प के उत्थान एवं पतन के काल को विलुप्त होने से बचाया है भले ही कला का स्वरूप घरेलू हो किंतु वह धीरे-धीरे पूर्व की भांति अपनी प्रतिष्ठा स्थापित कर लेती है ।

आधुनिक काल अर्थात वर्तमान में कई ऐसी कलाएं हैं जिसमें महिलाओं का प्रतिनिधित्व है जैसे मिथिला पेंटिंग इस कला में महिलाओं का योगदान अधिक है तथा इसकी अर्थव्यवस्था भारत सहित देश-विदेश को समाहित किया है

जिससे इससे जुड़े कलाकारों सहित महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण हुआ है । बावनबूटी हस्तशिल्प में महिलाओं का योगदान मास्टर बीबर के रूप में तो नहीं देखा गया किंतु सहयोगी रूप में इनका योगदान सराहनीय है भारत के किसी भी हस्तशिल्प के विकास एवं प्रगति में महिलाओं का योगदान अत्यधिक है। वह प्रमुख बुनकर के साथ-साथ सहायक के रूप में कार्य करती हैं। जैसे बिहार की मिथिला पेंटिंग, मंजूषा पेंटिंग, कलमकारी, लाख कला, भोजपुरी पेंटिंग, बांधनी कला, जामदानी बुनाई, चिकनकारी, इत्यादि हस्त कला में महिलाएं कार्य कर आर्थिक रूप से मजबूत हो रही हैं यदि नालंदा की बावन बूटी हस्तकला पर गौर किया जाए तो चाहे वह बसावन बीघा हो या बिहारशरीफ का खासगंज या फिर नेपुरा गांव में जहां भी मै कार्यक्षेत्र निरीक्षण पर गई सभी जगह पुरुष बुनकर ही मौजूद थे। महिलाएं सहायक के रूप में धागों को रंगना, धागों को लपेटना, धागा समेटना, धागों को सुखाना इत्यादि जैसे कार्य करती हैं, एक अन्य कार्यों में हाट,बाजार मे लोगों को बावन बूटी के बारे में, जानकारी देना, उत्पादों का मोल भाव करना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर बुनकर साथी के साथ हाट लगाना इत्यादि जैसे कार्य आधुनिक स्तर पर शुरू हुई है। जैसे-जैसे बावन बूटी हस्तकला का विकास हो रहा है वैसे-वैसे महिलाओं का भी अपने कार्यों का प्रसार हो रहा है।

श्रीचंद्रपुर (अस्थावा) में मेरे द्वारा कार्य निरीक्षण किया गया यहां के बुनकर सूती तथा सिल्क के कपड़ों पर काम करते हैं बावन बूटी का काम कुछ घरों में होता था, लेकिन कोरोना महामारी के कारण कई बुनकर ने इस कार्य को छोड़कर अन्य कार्य में संलग्न हो गए इसमें शामिल महिलाएं भी थी जो बिहार के बाहर कार्यों करने के लिए मजबूर हुई। उदाहरण कृष्णा तांती, उनकी पत्नी कुंती देवी एवम् अन्य। वर्तमान में श्रीचांदपुर में केवल एक घर बचा है जो बावन बूटी का कार्य करते हैं और वह भी कार्य स्वच्छंद रूप से नहीं बल्कि कार्यों तथा मजदूरी के हिसाब से बुनाई करते हैं। साक्षात्कार में पाया गया कि बुनकर के घर में जो महिलाएं हैं वह सहयोगी के रूप में कार्य करती हैं वीरमणि कुमार जो की बावन बूटी कला के एक प्रमुख बुनकर हैं वह बावन बूटी का कार्य करते हैं तथा उनकी पत्नी गुड़िया देवी उनका हाथ बटाती है। धागों को बोबिन में समेटना, लपेटना, लूम पर धागों को व्यवस्थित करना आदि इनका कार्य है इन सभी कार्यों से महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन हुआ है जो उत्पाद बनाने में अधिक समय लगता है वह सहयोग करने से स-समय तैयार हो जाता है। उनकी पत्नी से बातचीत करने के क्रम मे उन्होंने बताया कि कृषिगत भूमि उपलब्ध न होने के कारण हम लोग बुनकारी के कार्यों पर पूरी तरह निर्भर है, इसी से घर परिवार की रोज़मर्रा

जीवन चलती है बच्चों के स्कूल फीस से लेकर अपने परिवार के वृद्ध माता-पिता की देखरेख करना इस बुनाई का महत्व इंगित करता है। जैसे-जैसे उत्पाद की बिक्री होती है वैसे-वैसे आमदनी बढ़ती है जिससे पूरे परिवार को सुखी पूर्वक चलाया जाता है बावन बूटी हस्तशिल्प का विस्तार धीरे-धीरे क्षेत्रीय स्तर से बढ़कर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय परिधि को छू रहा है। भारत सरकार एवं राज्य सरकार के द्वारा बावन बूटी हस्तशिल्प का प्रचार-प्रसार सहित इससे जुड़े लोगों को पुरस्कार प्रदान कर रही है साथ ही सब्सिडी आधारित सहयोग दे रही है। इन सभी के प्रयासों के प्रभाव स्वरूप इस हस्तशिल्प में महिलाओं की संख्या में वृद्धि हुई है। वर्ष 2010 से पहले बावन बूटी कला में महिलाओं की संख्या कम थी किंतु 2010 के उपरांत इस कला में महिलाओं की संख्या में वृद्धि हुई है इसका एक उदाहरण बिहारशरीफ के मीरगंज में महिला विकास निगम के द्वारा सेल्फ हेल्फ ग्रुप के मदद से महिलाओं को रोजगार दिया जा रहा है।

खासगंज में सबाना खातून, नौसबा प्रवीण जो बुनकारी का काम जानती है और बावनबूटी के प्रमुख बुनकर शमशाद आलम जी के साथ सहयोगी के रूप में कार्य करती हैं। यह महिलाएं धागों को ताना पर चढ़ना, धागों को सुखाना, धागों की कताई जैसे कार्य कर अपना योगदान दे रहीं हैं। हालांकि इन महिलाओं से बातचीत के क्रम में एक बात सामने आई है कि यह महिलाएं को बावन बूटी की बुनाई के काम आते हैं किंतु काम के अभाव तथा अपर्याप्त आमदनी उनकी उदासीनता बढ़ा दी है अब वह सहयोगी के साथ-साथ अन्य कार्य करती हैं।

इस शोध कार्य में उन स्थानों की स्थिति सामान दृष्टिगत होती है जैसे बसवन बीघा में बुनकर बावन बूटी के कार्य तो कर रहे हैं किंतु यहां भी महिला मास्टर बीबर के रूप में कार्य नहीं कर रही है बल्कि सहयोगी रूप में कार्य करती है। इसी तरह मेरे द्वारा कार्य निरीक्षण के दौरान पाया गया कि यही स्थिति समान रूप से नेपुरा जैसे गांव में भी मौजूद है जो एक गंभीर प्रश्न को उठाता है, यह गांव बुनकरों का गांव है जो नालंदा जिला के परिधि में है यहां प्रत्येक घर में करघे हैं जो एक मजबूत ग्रामीण अर्थव्यवस्था को प्रतिबिंबित करता है प्रत्येक घर में खट- खट की आवाज हमारी परंपरा की मधुर ध्वनि है जो हमें अपने संस्कृति एवं धरातल से जोड़ती है। नेपुरा में अधिकांश बुनकर पुरुष है यहां महिलाएं बुनाई के कार्य में सहयोग प्रदान करती हैं किंतु यहां भी मास्टर महिला बीबर की संख्या कम है जो एक विचारणीय तथ्य उभर कर सामने आता है।

नालंदा जिला के हस्तकला बावन बूटी में महिलाओं की भागीदारी अन्य कलाओं की अपेक्षा कम है इसका प्रमुख कारण एक नहीं अनेक है जिसके कारण महिलाएं इस कला में प्रत्यक्ष भागीदारी नहीं दे पा रही हैं जैसे-

- कच्चे धागों की दिन प्रतिदिन बढ़ती कीमत
- बने उत्पाद की बढ़ती कीमत
- ग्राहकों में जागरूकता की कमी
- अधिक मूल्य होने के कारण ग्राहकों में उदासीनता
- बुनकरों को अन्य सहायता एवं सब्सिडी प्राप्त न होना

- सरकारी सहायता उन जरूरतमंद बुनकर तक ना पहुंच पाना
- बुनकरों को प्रशिक्षण तथा सेड की कमी
- लोगो में बावन बूटी कला के प्रति जागरूकता की कमी
- बुनकरों को राजकीय तथा राष्ट्रीय पहचान पत्र प्राप्त न होना
- बुनकर तथा बाजार के बीच बिचौलिया की बढ़ती भूमिका
- अन्य कला की तरह बावन बूटी का जन प्रचार का अभाव
- भारतीय समाज में महिलाओं की दोहरी भूमिका होने के कारण कला के प्रति उदासीनता
- संयुक्त परिवार का कार्यभार होना

उपरोक्त कारणों सहित कई अन्य कारण शामिल है जिसके परिणाम स्वरूप 52 बूटी कला में महिलाओं की भागीदारी को कम किया है। कुछ महिलाएं तो बुनकारी का कार्य तो जानती हैं किंतु पर्याप्त लाभ तथा साल भर तक काम न मिलने के कारण वह अन्य कार्यों से जुड़ी हुई है इन प्रमुख कारणों का समाधान सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं के द्वारा किया जाना चाहिए। हालांकि सरकार के स्तर पर कई सराहनीय प्रयास किये जा रहे हैं जैसे बुनकरों को सब्सिडी पर धागा उपलब्ध कराना,स्टॉल, हाट, बाजार आदि के लिए स्थान उपलब्ध कराना,सरकारी आवास, अस्पताल को उत्पादों की खरीदारी हेतु प्रोत्साहित करना,बुनकरों को पुरस्कृत करना इत्यादि जैसे सहायता सरकारी स्तर पर की जा रही है। वहीं गैर सरकारी संस्थाओं के द्वारा बुनकरों को प्रशिक्षण , कार्य दिया जा रहा है उदाहरण स्वरूप सृजनी फाउंडेशन, वीवहैंड, बासवानबीघा प्राथमिक बुनकर समिति इत्यादि गैर सरकारी संस्थाएं इस कला में अपना योगदान दे रही हैं।

उपरोक्त समाधान व कार्य वर्तमान में महिलाओं की बावनबूटी हस्तकला में भागीदारी के लिए पर्याप्त नहीं है महिलाओं की सहभागिता बढ़ाने के लिए उपरोक्त कारणों का समाधान के साथ-साथ शिक्षा एवं प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। तभी महिलाएं अपने हस्त कुशलता का प्रदर्शन बावनबूटी कला पर करेंगी। वर्ष 2025 में नेपुरा के एक प्रमुख बुनकर श्री कमलेश कुमार को 52 बूटी साड़ी की बुनाई में उत्कृष्टता के लिए उन्हें राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया गया है यह पुरस्कार हस्तकला के क्षेत्र में नालंदा जिला के लिए गर्व का विषय है, किंतु यदि इस क्षेत्र में महिलाओं की भी भागीदारी बढ़ाई जाए तो आज महिलाओं को प्रमुख महिला बीबर के रूप में उपलब्धि प्राप्त होगी। महिलाएं अपने हुनर में परिपूर्ण है किंतु उन्हें समय-समय पर प्रशिक्षण,पर्याप्त आमदनी, जागरूकता, सहायता, प्रोत्साहन आदि के अभाव के कारण आज वह पीछे है,जिसपर कार्य करने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

प्राथमिक स्रोत

साक्षात्कार द्वारा डेटा प्राप्त:-

1.साक्षात्कार

- नीलू देवी 15/4/2026
- गिरजा देवी 14/4/2026
- लाखों देवी 15/4/2026
- अनुराधा देवी 15/4/2026
- गुड़िया देवी

द्वितीयक स्रोत

1. सिंह अशोक कुमार बिहार के हस्तशिल्प प्रथम संस्करण 2017 पृष्ठ संख्या 90-91प्रकाशक उपेंद्र महारथी शिल्पअनुसंधान संस्थान पटना
2. चट्टोपाध्याय कमलादेवी भारतीय हस्तशिल्प परंपरा पृष्ठ संख्या 39 प्रशासन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली 1992
3. सहाय डॉक्टर शिवस्वरूप प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास पृष्ठ संख्या 390 पंचम संस्करण 2020 मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली
4. योजना भारत का ताना-बाना मई 2024 अंक संख्या 05 पृष्ठ संख्या 7
5. भारतीय प्रतीको का लोक, दुबे श्यामसुंदर, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, पटना 2017
6. भारतीय इतिहास और संस्कृति, त्यागी एस जया,शंकर कुमार, रत्न सागर, दिल्ली विश्वविद्यालय 2013
7. The Artisans in 18th century Eastern India A history of Survival,Vipul Singh, concept publishing comp, new Delhi 2005, page no-34-35
8. Sing Martand,dhishti Rta kapur,saris of india page no38-39,1995
9. Omalley L.s.s.,Bengal District Gazettee Patna page no 138-139,vol-8,1904